आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 8 अंक : 6 फरवरी, 2021 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

72वें गणतंत्र दिवस पर माननीय कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा के उद्‌बोधन के अंश यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

वेटरनरी विश्वविद्यालय के डीन–डॉयरेक्टर्स, अधिकारी, कर्मचारी बंधुओ, प्रिय विद्यार्थियों, किसान और पशुपालकों भाईयों व बहनों, उपस्थित संभ्रान्त नागरिकों, प्रेस और मीडिया के बंधुओ और महिलाओं और बच्चो !

देश के 72वें गणतंत्र दिवस के पुनीत पर्व पर आप सभी को मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। बंधुओ ! विश्व के सबसे बड़े और सफल लोकतांत्रिक देश होने का गौरव हमें प्राप्त है। आज ही के दिन भारतीय संविधान लागू कर गणतंत्र व्यवस्था लागू की गई। हमारे देश का महान लोकतंत्र समाजवाद, धर्मनिरपेक्ष, संप्रभु गणराज्य है। गणतंत्र का पावन दिवस हमारे लोकतांत्रिक आस्थाओं और उसे और अधिक पुष्ट करने के संकल्प का दिन है। इस देश की एकता–अखंडता और खुशहाली के लिए प्राण–प्रण से जुटने का संकल्प लेने का दिवस है। हम आजादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले अमर शहीदों का पुण्य स्मरण कर उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। राज्य के एकमात्र राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर, संघटक महाविद्यालय, पशुधन अनुसंधान केन्द्रों और पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के माध्यम से राज्य के 22 जिलों में पशुचिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार के क्षेत्र में सेन्टर ऑफ एक्सीलेन्स के रूप में कार्य कर रहा है। वर्तमान समय में विश्व में जलवायु परिवर्तन और पशु कल्याण के विषय महत्वपूर्ण हो गए हैं अतः विश्वविद्यालय को अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वाह नई सोच और नवाचारों के साथ करने की जरूरत रहेगी। राज्य के एक मात्र वेटरनरी विश्वविद्यालय को पशुचिकित्सा, शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार के क्षेत्र में एक उत्कृष्ट संस्थान के रूप में कार्य करने के लिए तैयार किया गया है। विश्वविद्यालय में नए नियम–परिनियमों को लागू करके कार्यप्रणाली को अधिक प्रभावशाली बनाया गया है। मानव संसाधन उपलब्ध करवाने के लिए नई भर्ती, पदोन्नतियों का कार्य प्रगति पर है। विद्यार्थियों के शैक्षणिक व पाठ्येत्तर प्रवृत्तियों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए वर्चुअल क्लास रूम, नया परीक्षा भवन, टेनिस कोर्ट, नया जिम बनाया गया है। विश्वविद्यालय में पशुधन अनुसंधान केन्द्रों में जैविक उत्पादन और देशी गौ–वंश में भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीक से नस्ल संवर्द्धन और उत्पादन बढ़ाने के कार्य किये जा रहे है। पशुओं में प्रतिजैविकी प्रतिरोधकता की अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना में सहभागी और रीजनल एनीमल हसबेन्ड्री एण्ड एक्सटेंशन टेक्नोलॉजी फोरम का गठन किया गया है। पशु विज्ञान केन्द्रों द्वारा रोगनिदान सेवाएं शुरू की गई और 858 वैज्ञानिक पशुपालन के शिविर आयोजित कर 18051 पशुपालक व किसानों को लाभान्वित किया गया। राज्य में नवाचार के रूप में ई–पशुपालक चौपाल की शुरूआत की गयी है। गौशालाओं के सुदृढीकरण के लिए तकनीकी योगदान किया जा रहा है। तीनों संघटक महाविद्यालयों में ऊर्जा संरक्षण के सोलर प्लांट लगाने और विद्यार्थियों के उद्यमिता विकास कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। हमारा प्रयास है कि विकास की गति को बनाए रखकर आमजन की अपेक्षाओं के अनुरूप पशुचिकित्सा क्षेत्र के सुदृढ़ीकरण में अपना योगदान देते रहें। वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन पूर्ण ईमानदारी, निष्ठा और मेहनत से करने की जरूरत है। राजुवास को देश और दुनिया में एक उत्कृष्ट संस्थान के रूप में स्थापित करना हमारा संकल्प है। अमर शहीदों के पुण्य स्मरण के साथ, गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई देता हूँ।

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

गणतंत्र दिवस पर कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा द्वारा ध्वजारोहण और सलामी

72वें गणतंत्र दिवस पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने राजुवास के दीवाने–ए–आम प्रांगण में ध्वजारोहण कर सलामी दी। समारोह में छात्र–छात्राओं द्वारा देश भक्ति से ओत–प्रोत संगीत और नृत्य के कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। समारोह में कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने स्नातकोत्तर की ऑल इन्डिया प्रवेश परीक्षा में मेरिट में आने वाले 31 छात्र–छात्राओं, घुड़सवारी में अव्वल रहे 8 एन.सी.सी कैडेटस और उत्कृष्ट सेवा और कार्यों के लिए 11 शिक्षकों/अधिकारियों के सम्मान की घोषणा की। समारोह के पश्चात कुलपति, कुलसचिव एवं डीन– डायरेक्टर्स ने विश्वविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया। समारोह में राज्य सरकार की कोविड–19 गाईड लाइन की पालना को सुनिश्चित किया गया।

'पशुधन क्षेत्र में जेन्डर' पर राष्ट्रीय वेबिनार

वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (पी.जी.आई.वी.ई.आर.), जयपुर के पशुधन नवाचार, ज्ञान और उद्यमिता कौशल केन्द्र द्वारा 12 जनवरी को "पशुधन क्षेत्र में जेन्डर" विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि पशुपालन का 80 प्रतिशत कार्य महिलाओं के द्वारा ही किया जाता है। महिलाओं का कार्य केवल पशुपालन के रखरखाव तक ही सीमित नहीं रहा है बल्कि पशुचिकित्सा, शिक्षा, अनुसंधान व प्रसार में भी उनकी की अग्रणी भूमिका रही है। उन्होंने लैंगिक समानता के सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक प्रभाव पर भी अपने विचार व्यक्त किये। वेबिनार की मुख्य वक्ता डॉ. ममता धवन, अन्तराष्ट्रीय सलाहकार (पशुचिकित्सा, पशुधन और आजिविका क्षेत्र) ने पशुपालन क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी की चर्चा की। पशुपालन के क्षेत्र में महिलाओं के योगदान पर और अधिक शोध एवं अनुसंधान पर जोर दिया। वेबिनार का संचालन डॉ. अशोक बैंधा तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. रश्मि सिंह ने किया।

कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा को कर्नल पद की रैंक से नवाजा

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा को रक्षा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय कैडेट कोर में कर्नल कमांडेंट की रैंक से नवाजा गया है। भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना में राजस्थान से एकमात्र वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा को अवैतनिक कर्नल कमांडेंट नियुक्त किया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय की 1 राज आर. एण्ड वी. स्कवाड्रन एन.सी.सी. इकाई का नाम पूरे देश में छाया हुआ है। इस स्कवाड्रन के घुड़सवार कैडेट्स ने राष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धाओं में राज्य का नाम रोशन कर अपनी प्रतिभाओं का परिचय दिया है तथा वर्ष 1986 से राष्ट्रीय गणतंत्र दिवस, नई दिल्ली की परेड में इसके कैडेट व घुड़सवार शामिल होते रहे हैं।

उपमहानिदेशक (पशु विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा वी.यू.टी.आर.सी, टोंक का अवलोकन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के उपमहानिदेशक (पशु विज्ञान) डॉ. भूपेन्द्र नाथ त्रिपाठी द्वारा 6 जनवरी को पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अविकानगर, टोंक का अवलोकन किया गया। इस अवसर पर डॉ. अरूण कुमार तोमर, निदेशक, केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर, डॉ. एस. राय, निदेशक, केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मथुरा, डॉ. ए. साहू, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. राघवेन्द्र सिंह, प्रधान वैज्ञानिक भी उपस्थित रहे। केन्द्र के डॉ. दीपक गिल, डॉ. राजेश सैनी, डॉ. नरेन्द्र चौधरी तथा अमित चौधरी ने सभी माननीय गणों का स्वागत किया तथा केन्द्र की गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। प्रो. त्रिपाठी ने वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न जिलों में स्थापित वी.यू.टी.आर.सी. केन्द्रों द्वारा किसानों व पशुपालकों के कल्याण हेतु प्रसार के कार्यों की सराहना की।

कृषि विज्ञान केन्द्र की तर्ज पर राज्य में होंगे वेटरनरी विश्वविद्यालय के "पशु विज्ञान केन्द्र"

जिलों में पशुपालकों को वैज्ञानिक व उन्नत पशुपालन की विशेषज्ञ सेवाएं देने वाले वेटरनरी यूनिवर्सिटी ट्रेनिंग एण्ड रिसर्च सेन्टर (वीयूटीआरसी) अब पशु विज्ञान केन्द्र के नाम से जाने जायेंगे। वेटरनरी विश्वविद्यालय की पहल पर राज्य सरकार द्वारा इसकी प्रशासनिक स्वीकृति दी गई है। कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री लालचन्द कटारिया ने बताया कि राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (राजुवास), बीकानेर के अन्तर्गत वैज्ञानिक पशुपालन प्रशिक्षण के लिए राज्य में बाकलिया, सूरतगढ़, कुम्हेर, डूंगरपुर, टोंक, चूरू, बौजुन्दा, कोटा, सिरोही, धौलपुर, लूनकरणसर, जोधपुर, झुंझुनूं, जालौर एवं झालावाड़ में वीयूटीआरसी केन्द्र स्वीकृत हैं। इन केन्द्रों का मुख्य उद्देश्य जिला स्तर पर वैज्ञानिक प्रशिक्षण, सलाहकारी सेवाएं, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और पशु रोग निदान परामर्श सेवाएं प्रदान करना है। श्री कटारिया ने बताया कि वीयूटीआरसी नाम बोलचाल में थोड़ा कठिन होने से आम किसानों एवं पशुपालकों की जुबान पर सिरे नहीं चढ़ पाया है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए इनका नामकरण कृषि विज्ञान केन्द्र की तर्ज पर "पशु विज्ञान केन्द्र" किया गया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया संक्षिप्त व सरल नामकरण "पशु विज्ञान केन्द्र" किए जाने से विभिन्न जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में किसान और पशुपालकों को इसकी उपयोगिता और कार्यो की जानकारी में आसानी हो गई हैं। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि इन केन्द्रों द्वारा पशुपालन के क्षेत्र में स्थानीय समस्याओं पर अनुसंधान एवं उनका समाधान भी जिले में ही संभव हो, ऐसे प्रयास किये जा रहे है। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. आर.के. धूड़िया ने बताया कि इन केन्द्रों की स्थापना से जिला स्तर पर नवीन और उपयोगी तकनीक का तेजी से प्रसार कर अंतिम छोर तक बैठे किसानों व पशुपालकों तक पहुंच को सुनिश्चित किया गया है।

राज्य स्तरीय 'राजुवास ई-पशुपालक चौपाल'

वैज्ञानिक भेड़ पालन पर हुई परिचर्चा

एशिया की सबसे बड़ी ऊन मंडी बीकानेर में है जहां 250–300 ऊन धागे की फैक्ट्रियां है। राजस्थान की भेड़ों से अन्य राज्यों के मुकाबले तीन गुना अधिक ऊन का उत्पादन होता है। यहां भेड़ों की चोकला, मगरा और नाली नस्लों की ऊन विश्व के बेजोड़ गलीचे और नमदा बनाने के लिए श्रेष्ठ है। मालपुरा, जैसलमेरी और मारवाडी नस्लों की ऊन दरियां बनाने में उत्तम हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 13 जनवरी को आयोजित ई–पशुपालक चौपाल में यह जानकारी दी गई। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि देश में भेड़ संख्या के हिसाब से राजस्थान चौथे स्थान पर है जबकि राजस्थान ऊन उत्पादन में देश में प्रथम स्थान पर है। राजस्थान के पशुपालकों द्वारा भेड़ पालन परम्परागत तरीके से किया जा रहा है जिसे वैज्ञानिक ढंग से करने की जरूरत है ताकि कम लागत में अधिक मुनाफा प्राप्त हो सके। केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, मरूस्थलीय क्षेत्र बीकानेर के प्रभागाध्यक्ष एवं प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. एच.के. नरूला ने कहा कि वैज्ञानिक तरीके से भेड़ पालन करने से एक भेड़ से प्रतिवर्ष 4–5 हजार रूपए की आमदनी हो सकती है। मांस के लिए मालपुरा, जैसलमेरी, मारवाड़ी, नाली नस्लें उपयुक्त है। समय पर टीकाकरण, समुचित आहार तथा रोगों का उपचार करवाने से भेड़ों की मृत्युदर में कमी लाकर नुकसान से बचा जा सकता है।

साईलेज : डेयरी फार्मिंग के लिए वरदान

डेयरी फार्मिंग के लिए वरदान–साईलेज विषय पर वेटरनरी विश्वविद्यालय में ई–पशुपालक चौपाल का आयोजन 27 जनवरी को किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने कहा कि पशुओं को सालभर हरा और पौष्टिक चारा कम लागत और कम मेहनत में उपलब्ध करवाने के लिए साइलेज अत्यंत उपयोगी है। इससे दुधारू पशुओं के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी होती है और यह पशुपालकों के लिए लाभकारी और एक सरल विधि है। खन्ना (पंजाब) के एक्सीलैन्ट एन्टरप्राइजेज प्रा. लिमिटेड के विशेषज्ञ डॉ. हरिन्द्र सिंह ने साइलेज को बनाने और उसकी उपयोगिता के बारे में पशुपालकों को विस्तृत जानकारी दी। मक्का, ज्वार और बाजरे जैसी दानेदार प्रमुख फसलों के चारे का साईलेज बनाया जाता है। दूधिया अवस्था में मक्की का भुट्टा जमीन में खड्ढा खोदकर दबाने अथवा साइलेज बैग में रखकर उसे हवा पानी से दूर रहकर तैयार किया जा सकता है। 40 से 45 दिन बाद इसे उपयोग में लिया जा सकता है। पशु की दुग्ध क्षमता और भार वहन क्षमता के अनुसार साईलेज चारा खिलाया जाना चाहिए। तीन माह से छोटे पशुओं को साइलेज नहीं देना चाहिए। साइलेज पशुपालकों के लिए समय और श्रम की बचत के साथ–साथ पशुओं के स्वास्थ्य, अच्छे पाचन और अधिक दुग्ध उत्पादन के लिए अत्यंत उपयोगी है।

ज्ञान और विज्ञान को उद्यम में बदलने की जरूरत : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्र बाकलिया में आत्मा योजना के अंतर्गत दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन जनवरी 2021 को किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा एवं विशिष्ट अतिथि प्रो. संजीता शर्मा डीन, पीजीआईवीआर, जयपुर थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. राजेश कुमार धूड़िया निदेशक प्रसार शिक्षा ने की। माननीय कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने संस्थान की विभिन्न गतिविधियों की सराहना करते हुए पशुपालकों से प्रशिक्षण में अर्जित ज्ञान को अपने जीवन में उतारने तथा पशुपालन को व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित किया। माननीय कुलपति महोदय ने कहा की आज के दौर में ज्ञान–विज्ञान को उद्यम में बदलना समय की मांग है। पशुपालकों द्वारा इस और कदम बढ़ाये जाये तो उनकी दशा में सुधार हो सकता है। विशिष्ट अतिथि प्रो. संजीता शर्मा डीन, पीजीआईवीआर, जयपुर ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस तरह के प्रशिक्षणों में अधिक से अधिक भाग लें एवं पशुपालन को मुख्य आय के स्रोत में बदलने का प्रयास करें। प्रो. राजेश कुमार धूड़िया निदेशक प्रसार शिक्षा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने उद्बोधन में संस्थान द्वारा अब तक किये गये कार्यों पर प्रकाश डाला। प्रशिक्षण शिविर के दौरान प्रतियोगिता के विजयी पशुपालकों को पुरस्कृत भी किया गया। केंद्र के प्रभारी अधिकारी डॉ. महेंद्र तँवर, डॉ. गौरव जैन एवं डॉ. परमजीत ने प्रशिक्षण का आयोजन किया। इस अवसर पर केंद्र के तीन पशुपालक प्रकाशनों का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया तथा माननीय कुलपति महोदय एवम् अन्य अतिथियों द्वारा केंद्र पर आधुनिकतम तकनीक से युक्त स्मार्ट बोर्ड का अनावरण किया गया।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलटी के तहत जयमलसर में उन्नत पशुपालन पर प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा "उन्नत पशुपालन–जैविक पशुपालन" विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम ग्राम जयमलसर में 16 जनवरी को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोसिबिलिटी के तहत गोद लिए गांव जयमलसर के 39 पशुपालक शामिल हुए। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान जैविक पशुपालन के महत्व, जैविक चारा उत्पादन, जैव विविधता, जैविक मुर्गी एवं बकरी पालन और जैविक स्वच्छ दुग्ध उत्पादन पर विषय विशेषज्ञ डॉ. दीपिका गोकलानी, डॉ. सीताराम गुप्ता, डॉ. नीरज कुमार शर्मा, डॉ. मनोहर सैन, डॉ. विरेन्द्र कुमार, डॉ. अमित कुमार, डॉ. महेन्द्र तंवर, डॉ. मंगेश कुमार द्वारा जानकारी दी गयी। प्रशिक्षण के समापन पर निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. धूड़िया ने सभी प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किये। प्रशिक्षार्थियों को पशुधन अनुसंधान केन्द्र, कोडमदेसर का भ्रमण करवाया गया और केन्द्र के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी गई।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

वी.यू.टी.आर.सी., रतनगढ़ (चूरू)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 4, 8, 12, 22 एवं 28 जनवरी को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 117 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., डूंगरपुर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 4, 8, 13, 18 एवं 21 जनवरी को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर में 97 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., सिरोही

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 8, 12, 15, 19, 22 एवं 25 जनवरी को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 121 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., झुंझुनूं

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, झुंझुनं द्वारा 8, 13, 18, 21 एवं 27 जनवरी को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 86 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., कुम्हेर (भरतपुर)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 8, 13, 18, 23 एवं 28 जनवरी को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 89 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., टोंक

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 4 एवं 8 जनवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन एवं 15–16, 17–18, 24–25, 27–28 एवं 29–30 जनवरी को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 220 पशुपालकों को लाभान्वित किया।

वी.यू.टी.आर.सी., धौलपुर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 5, 8, 12, 15, 19 एवं 21 जनवरी को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 108 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., कोटा

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 4, 8, 11, 13, 15, 19 एवं 22 जनवरी को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 170 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., लूनकरणसर (बीकानेर)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 12, 19, 22, 25 एवं 29 को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन कर 108 पशुपालकों को लाभान्वित किया।

वी.यू.टी.आर.सी.,बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौडगढ़) द्वारा 8, 16, 19 एवं 29 जनवरी को आफॅलाइन तथा 12–13, 21–22 एवं 27–28 जनवरी को केन्द्र परिसर में आयोजित दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 152 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 6, 11 एवं 18 जनवरी को एक ऑनलाइन तथा 15–16 एवं 28–29 जनवरी को दो दिवसीय ऑफलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 151 पशुपालकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., अजमेर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 5, 12, 16, 19, 23 एवं 28 जनवरी को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 126 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., बाकलिया (नागौर)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया –लाड़नू द्वारा 5, 12, 16, 20 एवं 28 जनवरी को ऑनलाइन एक दिवसीय एवं 7–8 एवं 27–28 जनवरी को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 181 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., जोधपुर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 12, 19, 25 एवं 29 जनवरी को ऑफलाइन एवं 5–6 जनवरी को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 103 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 7, 12 एवं 22 जनवरी को गांव फेफाना, गोरखाना एवं भगवान गांवों में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 66 किसानों ने भाग लिया।

पशुओं में खनिज तत्वों की कमी से हो सकते है रोग

डेयरी के व्यवसाय से अधिक लाभ लेने के लिए खनिज लवण पशुओं की खुराक में उतना ही आवश्यक है जितना पशुओं की खुराक में हरा चारा और दाना। पशु आहार में इन सब खनिज तत्वों की मात्रा पर्याप्त होने के साथ–साथ इनका अनुपात भी सही होना चाहिए। पशु आहार में यदि इन खनिज तत्वों की कमी होने से पशुओं में कमजोरी आ जाती है तथा अनेक प्रकार की बीमारियां भी हो सकती है।

कैल्शियम तथा फास्फोरस की कमी : दोनों खनिज तत्व पशुओं की हड्डियों तथा दांतों के निर्माण व मजबूती प्रदान करने में सहायक है। वयस्क पशुओं में दूध उत्पादन में कैल्शियम का काफी योगदान रहता है। दुधारू पशुओं के ब्याने के तुरन्त बाद कैल्शियम की कमी के कारण 'मिल्क फीवर' नामक रोग हो जाता है तथा दूध उत्पादन में कमी व पशु में सुस्ती आ जाती है। कैल्शियम व फास्फोरस की कमी से नवजात बछड़े–बछड़ियों में 'रिकेटस' नामक रोग हो जाता है जिससे हड्डियों का विकास या तो पूर्ण रूप से रुक जाता है या उनका विकास विकृत रूप से होता है। बछड़ों में हड्डियां कमजोर हो जाती है व पैरों की हड्डियां मुड़ जाती है। टेढ़ी–मेढ़ी हड्डियों के जोड़ बड़े हो जाते है तथा उनमें प्रायः दर्द रहता है। वयस्क पशुओं में इन तत्वों की कमी से 'अस्थि मृदुता' उत्पन्न हो सकती है, जिसके फलस्वरूप हड्डियों के टूटने का भय रहता है। पशु के शारीरिक विकास में कमी आ जाती है तथा प्रथम ब्यात की आयु में विलम्ब होता है। आहार में फलीदार चारे होने से कैल्शियम पर्याप्त मात्रा में मिल जाता है। खनिज मिश्रण के द्वारा भी इसकी पूर्ति की जा सकती है। फास्फोरस की कमी से पशु को भूख कम लगती है तथा पशु 'पाइका' नामक बीमारी से ग्रसित हो जाते है जिसमें पशु मिट्टी, पत्थर, कपड़ा, लकड़ी आदि अखाद्य पदार्थों को खाने लगते हैं तथा दीवारों को भी चाटना शुरू कर देते है। गेहूं के चोकर व हड्डी के चूर्ण में फास्फोरस अधिक मात्रा में पाया जाता है।

आयोडीन की कमी : पशुओं में आयोडीन की कमी से 'गलगंठ'/घेंघा नामक रोग हो जाता है जिसमें थायरायड ग्रन्थि का आकार बढ़ जाता है व थायरोक्सिन हार्मोन बनना कम अथवा रूक जाता है। ग्याभिन पशुओं में आयोडीन की कमी से गर्भपात हो सकता है या मरे हुए, कमजोर व बिना रोएं के बच्चे पैदा होते हैं। त्वचा कठोर व खुरदरी हो जाती है। ऐसे बच्चों की मृत्युदर अधिक होती है।

मैग्नीशियम की कमी : मुलायम तथा प्रारम्भ की घास चरने वाले नवजात बछड़ों व मेमनों में मैग्नीशियम की कमी के कारण 'ग्रास टेटैनी' होने का डर रहता है। जिसमें पशु लड़खड़ाने लगता है तथा कमजोरी आ जाती है।

लोहे व तांबे की कमी : खून में हीमोग्लोबिन के निर्माण में लोहे व तांबे की आवश्यकता होती है। इन तत्वों की कमी से 'एनीमिया' नामक रोग हो जाता है, पशु कमजोर तथा पीला पड़ जाता है, जिसका प्रतिकूल असर उसके दुग्ध उत्पादन पर पड़ता है। तांबे की कमी से पशु गर्मी/पाली में नहीं आते तथा उनकी प्रजनन क्षमता में कमी आ जाती है। फलीदार चारे में लोह व तांबे की प्रचूर मात्रा पाई जाती है।

नमक की कमी : खुराक में नमक की कमी होने से पशु को भूख कम लगती है व पशु कमजोर हो जाता है। शरीर भार में कमी, खुरदरी रोए की परत, आंखों की चमक में कमी, कोर्निया का खुरदरापन, दुधारू पशुओं में दूध उत्पादन में कमी, हृदय की असामान्य गति, पानी की कमी के कारण शुष्कता, एक दूसरे पशु की खाल चाटना, धूल चाटना, बार–बार व अधिक मात्रा में मूत्र करना व मूत्र पीना, नमक की कमी के प्रमुख लक्षण है।

अतः पशु को जीवन पर्यन्त लाभदायक बनाये रखने के लिए ऐसा सन्तुलित पशु आहार दिया जाना चाहिए जिसमें 2 प्रतिशत की दर से खनिज लवण व 1 प्रतिशत की दर से साधारण नमक मिला हुआ हो।

डॉ. दीपिका धूड़िया, सहायक प्राध्यापक
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

उन्नत मुर्गी पालन के लिए हार्मोन जरूरी नहीं

हार्मोन प्रोटीन द्वारा निर्मित जैविक पदार्थ है जो प्राकृतिक और सिंथेटिक प्रकार के होते हैं। प्राकृतिक हार्मोन शारीरिक अंगों द्वारा उत्पादित होते हैं और वृद्धि, विकास और प्रजनन जैसे शारीरिक क्रियाओं को विनियमित करते हैं। दूसरी ओर, सिंथेटिक हार्मोन, उनके प्राकृतिक समकक्षों के कार्यों की नकल करने के लिए बनाए जाते हैं। डायथाइलस्टिलबॉस्ट्रोल (डीईएस) और हेक्सोएस्ट्रोल, स्टैलेबिन सिंथेटिक हार्मोन के उदाहरण जो एस्ट्रोजन हार्मोन का एक समूह है, जिनका उपयोग 1950 के दशक में अमेरिका और हांगकांग में पोल्ट्री उत्पादन में किया गया था जिसके मानव स्वास्थ्य पर अनेक दुष्प्रभाव सामने आये जैसे प्रजनन विषाक्तता, कार्सिनोजेनेसिस, जीनोटॉक्सिसिटी, इम्युनोटॉक्सिसिटी और न्यूरोटॉक्सिसिटी सहित विशिष्ट अंग विषाक्तता, अंतःस्रावी व्यवधान, मानव आंतों के माइक्रोफ्लोरा पर प्रभाव और उपापचय अनियमितताएँ। सामान्यतः प्रोटीन हार्मोन अंतर्ग्रहण के बाद टूट जाते हैं और गैर–कार्यात्मक हो जाते हैं अतः इन्हें त्वचा के नीचे प्रत्यारोपित इंजेक्शन या पेलेट के रूप में दिया जाता है। वर्तमान वाणिज्यिक पोल्ट्री की दक्षता में अत्यधिक वृद्धि हुई है, यह कम आहार में कम खाद और अधिक मास उत्पादित करते हैं। आज का ब्रोईलर चिकन 1950 के दशक के ब्रायलर चिकन से बहुत बड़ा हैं, इस वाणिज्यिक पोल्ट्री के तेज विकास के पीछे के मुख्य कारण वांछित लक्षणों का आनुवंशिक चयन, पोषण और कुशल स्वास्थ्य प्रबंधन है ना कि हार्मोन का उपयोग।

मुर्गी पालन में हार्मोन का उपयोग नही करने के पीछे मुख्य तर्क:

- मुर्गी पालन में हार्मोन का उपयोग अवैध हैं और देश व विदेशों में इसकी रोकथाम हेतु सख्त सख्त कानून बने हुए हैं। खाद्य और औषधि प्रशासन ने 1960 के पश्चात पोल्ट्री उत्पादन में हार्मोन का उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया।
- वृद्धि हार्मोन देने से मुर्गियों के वजन में कोई वृद्धि नहीं होती क्योंकि वजन वृद्धि एक अत्यंत जटिल संयोजन है और यह कई कारकों पर निर्भर करता है। वजन वृद्धि के लिए इनका उपयोग लाभप्रद साबित नही होगा क्योंकि इसकी लागत बहुत अधिक है इसलिए यह मुनाफे का पोल्ट्री उत्पादन नहीं है।
- हार्मोन देने की प्रकिया बेहद मुश्किल है, वृद्धि हार्मोन के सकारात्मक प्रभाव के लिए इसे निरंतर अन्तराल पर मुर्गियों में इंजेक्ट करने की आवश्यकता होगी जो इसे असंभव बना देती है। खोज में यह पाया गया है कि मुर्गियो में वृद्धि हार्मोन हर 90 मिनट में अपने चरम स्तर पर पहुंचता है अतः अगर हमें वृद्धि हार्मोन प्रभावी ढंग से देना है तो इसे सीधे नसो में नियमित रूप से देना होगा जो कि असंभव व अव्यवहारिक है।
- हार्मोन का उपयोग मुर्गियों को बीमारियों के प्रति ज्यादा संवेदनशील बना सकता है।

अतः मुर्गी–पालको को इन सब बातों का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए तथा साथ ही साथ यह भी समझ जाना चाहिए कि आज की ब्रायलर मुर्गियां आनुवाशिक रूप से बदली हुई है जो सामान्य आहार के साथ ही कम से कम बीमारियों के साथ अधिक से अधिक मुनाफा दे सकती है और आज के समय में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ रही। ऐसे में हार्मोन का उपयोग मानव स्वास्थ्य और मुर्गीपालन व्यवसाय पर विपरीत प्रभाव डाल सकता है।

डॉ. अभिषेक शर्मा, डॉ. भूपेन्द्र कस्वां, डॉ. मंगेश कुमार
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

पशुओं के प्रमुख रक्त परजीवी जनित रोग

पशुपालन व्यवसाय का भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान है और यह ग्रामीण पशुपालकों की आजीविका चलाने का साधन भी है। संसार में सर्वाधिक पशुओं की संख्या भारत में है। पशुपालन व्यवसाय को लाभप्रद बनाने में स्वस्थ पशुओं की अहम भूमिका होती है क्योंकि स्वस्थ पशुओं से ही अधिक उत्पादन प्राप्त हो सकता है। यदि पशु बीमार हो तो उसका सीधा असर उसके उत्पादन क्षमता पर पड़ता है। हमारे देश में जलवायु के बदलते रहने के कारण पशुओं में कई तरह के परजीवी जनित रोग होने की संभावना रहती है। परजीवियों में भी कुछ आंतरिक परजीवी पशुओं के रक्त में पाए जाते हैं जिनको रक्त परजीवी कहा जाता है। ये आंखों से दिखाई नही देते, इन्हें सूक्ष्मदर्शी यंत्र द्वारा देखना ही संभव है। ये परजीवी अधिकांशतः मक्खी, किलनी (चीचड़) तथा दूसरे कीटों द्वारा पशुओं का रक्त चूसने से फैलते हैं। रक्त परजीवी पशुओं को कमजोर एंव निढाल बनाकर उत्पादन क्षमता एंव कार्यक्षमता को कम कर देते है। रक्त परजीवी जनित रोगों में पशुओं का इलाज समय पर ना होने से पशुओं की मृत्यु तक हो सकती है। अतः समय पर पशुचिकित्सक से उपचार करवाना आवश्यक है। पशुओं में होने वाले रक्त परजीवी जनित रोग मुख्यतः थाइलेरियोसिस, ट्रिपैनोसोमियासिस एंव बबेसियोसिस है।

बबेसियोसिस

बबेसियोसिस पशुओं में रक्त प्राटोजोआ परजीवी से होने वाले प्रमुख रोगों में से एक मुख्य रोग है। यह रोग बबेसिया प्रजाति के प्रोटोजोआ से होता है एंव चीचड़ (किलनी) के माध्यम से पशु शरीर में प्रवेश कर रक्त की लाल रक्त कणिकाओं में अपनी संख्या बढाने लगता है। इसके फलस्वरूप पशुओं में लाल रक्त कणिकायें नष्ट होने से खून की कमी होने से रक्त अल्पता (एनीमिया) हो जाता है। यह रोग गाय, भैंस, घोड़ा, श्वान, भेड़ एंव बकरी में देखने को मिलता है। इस रोग के मुख्य लक्षणों में तेज बुखार का आना, श्वसन व हृदय गति का तेज होना, भूख न लगना, हीमोग्लोबिनयूरिया व पीलिया है एंव पशु का मूत्र गहरे लाल (कॉफी) रंग का हो जाता है। ग्याभिन पशुओं में कभी –कभी इस रोग से गर्भपात भी हो जाता है। कभी–कभी रोग की तीव्रता बढ़ने पर पशु तड़पता है, कौमा में जा सकता है एंव मृत्यु तक हो सकती है। उपचार हेतु इंजेक्शन डाइमिनाज़िन एसिट्यूरेट 0.8–1.6 ग्राम प्रति 100 किलो ग्राम शरीर भार के अनुसार पशुओं में मांस में दिया जाना चाहिए। साथ ही लीवर टॉनिक, एंटीहिस्टामिनिक व एंटीपायरेटिक दवाओं के साथ खून बढाने वाली दवाओं का उपयोग करके रक्त अल्पता या एनीमिया को दूर किया जा सकता है। समय रहते पशुओं का इलाज कराना चाहिए। चिचडों के प्रकोप से पशुओं को बचाने के लिए पशुओं में आइवरमेक्टिन का इंजेक्शन एवं साइपरमेथ्रिन व डेल्टामेथ्रिन का छिडकाव करना चाहिए।

ट्रिपैनोसोमियासिस

यह पशुओं में होने वाला एक संक्रामक व घातक रोग है। यह रोग ट्रिपैनोसोमा इवान्साई नामक प्रोटोजोआ के कारण उत्पन्न होता है जो कि सीसी मक्खियां, टेबेनस एंव स्टोमोक्सिस मक्खियों के काटने एंव खून चूसने से एक पशु से दूसरे पशु में फैलता है। यह प्रायः गाय, भैंसों, भेड़, बकरियों, कुत्ता एंव ऊंट में देखने को मिलता है। ऊंट में इस बीमारी के 3 साल तक रहने से इसे तिबरसा भी कहा जाता है। इस रोग के प्रमुख लक्षणों में हल्के से तेज बुखार का आना, चारा पानी छोड देना, लगातार कमजोर होते जाना, कुछ पशुओं में आंखे लाल हो जाती है, सिर को दीवार या जमीन पर मारना, तेज उत्तेजना एवं कई बार पशु को दौरा बढने पर तेज कंपकपाहट होती है, पशु अचानक गिर जाता है एंव पशु की मृत्यु तक हो सकती है। उपचार एंव रोकथाम हेतु क्यूनापाइरामिन (एट्रिसाइडप्रोसाल्ट, क्यूनापाइरामिन मिथाइल सल्फेट) 3–5 मिली ग्राम प्रति किलोग्राम शरीर भार के अनुसार सबक्यूटेनियस इंजेक्शन दिया जाना चाहिए।

थाइलेरियोसिस

यह रोग मुख्यतः संकर नस्ल के गौवंशों में होता है तथा इस रोग में छोटे वत्सों में मृत्यु दर अधिक होती है। यह रोग थाइलेरिया नामक रक्त परजीवी (प्रोटोजोआ) के कारण होता है एंव चींचड़ों से फैलता है। यह रोग अधिकांशतः गाय, भेड़, बकरियों में होता है। यह रोग रक्त प्रोटोजोआ थाइलेरिया द्वारा होता है व चीचड़ पशुओं के शरीर से खून चूसने के समय इस रोग को फैलाता है। इस रोग के प्रमुख लक्षणों में तेज बुखार (105 से 107 डिग्री फेरेनहाइट) का होना, एनीमिया, पशु चारा–पानी छोड़ देना, दूध उत्पादन का कम होना, पशु शरीर की लिम्फनोड्स, विशेषकर पशु के आगे के पैरों की लिम्फनोड (सुप्रास्केप्यूलर) बढ़ जाती है, आंख, नाक, मुंह से पानी आता है एंव कभी–कभी सांस लेने में कठिनाई आती है एंव गंभीर स्थिति में पशु की मृत्यु तक हो सकती है। उपचार हेतु बूपारवाक्विन 2.5 मिली ग्राम प्रति किलोग्राम शरीर भार के अनुसार एंव ऑक्सिट्रेटासाइक्लिन 10 से 20 मिली ग्राम प्रति किलोग्राम शरीर भार एंव लक्षण के अनुसार उपचार किया जाता है। छोटे वत्सों में रक्षावैक–टी का टीका लगवाना चाहिए।

रक्त परजीवी जनित रोगों की रोकथाम

यह रोग किसी न किसी माध्यम के द्वारा फैलते हैं अतः यह आवश्यक है कि इन रोगों से पशुओं को बचाने के लिए माध्यम पर ही रोक लगानी आवश्यक है अतः सीसी मक्खियां, टेबेनस एंव स्टोमोक्सिस मक्खियों व पशु व पशुशाला में चीचड़ो की रोकथाम आवश्यक है। साफ–सफाई हेतु कीटनाशकों का प्रयोग निरन्तर करवाना चाहिए।

डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा, डॉ. निखिल श्रृंगी एंव डॉ. तृप्ति गुर्जर,
वी.यू.टी.आर.सी., कोटा, (मो. 9784511656)

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–फरवरी, 2021

पशु रोग	पशु प्रकार	प्रभावित जिले			
		अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम सभांवना	बहुत कम संभावना
लंगड़ा बुखार	गाय, भैंस	––	––	––	जयपुर, उदयपुर
ब्लू टंग रोग	भेड़	––	––	बहुत कम संभावना	बाड़मेर, बीकानेर, चूरू, जैसलमेर, जालौर, झालावाड़, जोधपुर, नागौर, पाली, राजसमंद
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	हनुमानगढ़	––	––	––
खुरपका, मुंहपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, ऊंट	उदयपुर, जयपुर	अलवर, झुंझुंनूं	धौलपुर, श्रीगंगानगर	बारा, बूंदी, चित्तौड़गढ़, दौसा, डूंगरपुर, झालावाड़, करौली, कोटा, सीकर, राजसमंद, सिरोही
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	दौसा, करौली, सवाईमाधोपुर	अजमेर, भरतपुर	––	अलवर, बांसवाड़ा, बारां, भीलवाड़ा, बूंदी, चित्तौडगढ़, धौलपुर, गंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, झालावाड़, झुंझुनं, कोटा, प्रतापगढ़, राजसमंद, टोंक, उदयपुर
पी.पी.आर	बकरी	जैसलमेर	––	––	अजमेर, अलवर, बांसवाड़ा, बाड़मेर, भीलवाड़ा, चित्तौडगढ़, डूंगरपुर, जयपुर, जालौर, झालावाड़, उदयपुर, झुंझुनूं, नागौर, पाली, प्रतापगढ़, राजसमंद, सीकर, सिरोही, टोंक
माता रोग	भेड़, बकरी	हनुमानगढ़	––	––	––
थीलेरिओसिस	गाय के बछड़े	––	––	––	अलवर, डूंगरपुर, जालौर, उदयपुर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. आर.के.सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, एवं डॉ. जे.पी. कच्छावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन नं0 0151–2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

रामेश्वरलाल सिंहमार ने बकरी पालन व सूअर पालन को अपना व्यवसाय बनाया

रामेश्वरलाल की शिक्षा बीए तक हुई है। रामेश्वरलाल ने महज 10 बकरियों से प्रारंभ किया। यह व्यवसाय 3 साल में 50 बकरियों तक पहुंच गया व उनके जुनून और अथक प्रयास से व लगातार पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्र सूरतगढ़ से संपर्क करते रहते हैं। केंद्र के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन से उन्होंने बकरी पालन के साथ 2 साल से सूअर पालन भी प्रारंभ कर दिया है। सूअर पालन करके उनको अच्छा लाभ प्राप्त हुआ। वे अपने फार्म में अजोला उगा रहे हैं। साथ ही सहजन के 20 पौधे भी लगा रखे हैं। यह पशुओं की जबरदस्त खुराक है। रामेश्वरलाल के अनुसार बकरी पालन में सूअर पालन से इस वर्ष लगभग तीन लाख की आमदनी हुई है। पशुओं में नियमित टीकाकरण होने के साथ ही आवश्यकता अनुसार कृमिनाशक दवा भी समय– समय पर केंद्र के वैज्ञानिकों की सलाह के अनुसार देते हैं। रामेश्वरलाल पारंपरिक खेती में भी अपना योगदान देते हैं। कृषि के साथ–साथ उनके पास डेयरी के लिए 5 गाय है इनकी संख्या भी वह बढ़ा रहे हैं। उनका कहना है कि बकरी के दूध की बाजार में अच्छी मांग है। गाय या भैंस के दूध की तुलना में बकरी का दूध काफी ऊंचे दाम पर बिकता है। इसमें प्रोटीन भी काफी अधिक मात्रा में होता है। उन्होंने कहा कि जल्द ही बकरी पालकों की सोसाइटी बनाई जाएगी। इसके माध्यम से बकरी के दूध का प्रोसेसिंग यूनिट स्थापित की जाएगी, जिससे बकरी पालकों को दूध बेचने में परेशानी न आए। रामेश्वरलाल की सफलता से आसपास के गांव वाले उनके पास जानकारी लेने के लिए आते हैं। वह सभी के लिए एक प्रेरणा का स्त्रोत बने हुए हैं। इतना ही नहीं उन्होंने अपने साथ कई लोगों को जोड़ कर एक ग्रुप के रूप में कार्य करने की सफलता भी मिली है। रामेश्वरलाल अच्छी शिक्षा के साथ– साथ एक अच्छे पशुपालक बनकर समाज के सामने आए हैं। वह इस सफलता का श्रेय अपने परिवार एवं पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्र सूरतगढ़ को देते हैं। **(सम्पर्क :: रामेश्वर लाल सिंहमार, गांव 2 LM, अनूपगढ़, श्रीगंगानगर मो. : 9549192000)**

निदेशक की कलम से...

हरे चारे का ''हे'' परिरक्षण उपयोगी है

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाइयों और बहनों।

राम–राम सा।

दुधारू पशुओं के पोषण में हरे चारे का विशेष महत्व है, लेकिन वर्ष पर्यन्त हरा चारा उपलब्ध नहीं हो पाता। ऐसे में चारे का परिरक्षण एवं भण्डारण करना अत्यंत आवश्यक है। हरे चारे के परिरक्षण की दो प्रमुख विधियां है। साईलेज में हरे चारे को काटकर हरी अवस्था में रखना और हरे चारे को काटकर सुखाकर रखना ''हे'' विधि में आता है। ''हे'' बनाने के लिए किसी भी फसल को अच्छी तरह पकने से पहले जब शुष्क पदार्थ की मात्रा 60 प्रतिशत के लगभग हो, काट लिया जाता है और सग्रंह के लिए सुखा लिया जाता है। यह भूसे से अधिक स्वादिष्ट और पोषण की दृष्टि से उत्तम होता है क्योंकि सभी फसलें पकने से पूर्व काटकर सुखा ली जाती है। अगर सही पद्धति से बनाया जाए तो यह रंग में हरा, फफूंदी व धूल–कूड़े, करकट रहित होता है और इसकी सुगंध अच्छी होती है। अर्द्धशुष्क क्षेत्र में ''हे'' को बनाना आसान है। विशेष रूप से जहां बरसाती मौसम थोड़े ही समय के लिए होता है। कोई भी घास या दलहनी चारा जो पशु को खिलाया जा सकता है ''हे'' में बदला जा सकता है। कुछ विशेष प्रकार की किस्में जैसे बरसीम, लुसर्न, जई, अंजन घास इत्यादि इसके लिए उत्तम है। कुछ फसलों का जैसे मकचरी और पैरा घास ''हे'' के लिए अधिक मोटी होती है जिन फसलों में कांटे और बाल होते है वे ''हे'' बनाने के लिए अच्छी नहीं रहती। जई, ज्वार, अंजन इत्यादि अनाज की फसलें ''हे'' बनाने के लिए फूल आने की अवस्था में काट लेनी चाहिए और दलहनी चारे का ''हे'' बनाने के लिए फूल बनने की प्रारम्भिक अवस्था में काट लेना चाहिए, जब कलियां निकलनी शुरू हो। ''हे'' बनाने के लिए अच्छी धूप होनी चाहिए। इसके लिए मार्च–अप्रेल का महीना उचित रहता है। ''हे'' में आर्द्रता की मात्रा 15 प्रतिशत तक कम कर लेनी चाहिए तथा हरा रंग भी खत्म नहीं होना चाहिए। अत्यधिक धूप में सुखाने से कैरोटीन की कमी हो सकती है। सुखाने के लिए गट्ठर विधि, लकड़ी की बनी तिपाई पर, फॉर्मफेन्स विधि, कुट्टी काटकर या यांत्रिक विधि का उपयोग किया जा सकता है। 'हे'' को कुट्टी काटकर या बिना कुट्टी काटे भी खिलाया जा सकता है। ''हे'' चारे को पशुओं को खिलाने से पूर्व ही कुट्टी काटकर खिलाना उचित रहता है। हरे चारे की कमी के दिनों में दुग्ध उत्पादन में कमी आ जाती है। ऐसी अवस्था में सुरक्षित चारा खिलाने से उत्पादन स्तर को कायम रखा जा सकता है।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर (मो. 9414283388)

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

''धीणे री बात्यां''

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया